

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 6, इब्रानियों 5:1 1-6:20: पीछे मुड़कर नहीं देखना

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

इब्रानियों 5:11 में, लेखक यीशु के पुरोहितत्व के बारे में अपने व्याख्यान की आगे की गति को रोकता है और वह प्रस्तुत करता है जिसे अक्सर विषयांतर कहा जाता है। हालाँकि, इस उदाहरण में, विषयांतर उपदेश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस अंश में, 5:11 से 6:20 तक, हम पाते हैं कि लेखक फिर से श्रोताओं को उनके सामने मौजूद मुख्य चुनौतियों से रूबरू कराता है और उन्हें उन चुनौतियों का उचित तरीके से सामना करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इब्रानियों 5:11 से 6:3 में तर्कपूर्ण प्रवाह काफी जटिल है, जिसे मैं शुरू में ही स्पष्ट रूप से रेखांकित करना चाहता हूँ।

इब्रानियों 5:11 से 14 में लेखक द्वारा विकसित किए जा रहे तर्क को बीच में ही रोक दिया गया है, ताकि श्रोताओं को थोड़ा झकझोर दिया जा सके। वह उन्हें उपदेशक द्वारा दी जा रही बातों को समझने की उनकी क्षमता पर संदेह व्यक्त करके उकसाता है, क्योंकि वह सुझाव देता है कि ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने न तो पूरी तरह से आत्मसात किया है और न ही अपने जीवन में शामिल किया है, जो उन्हें अब तक सिखाया गया है और न ही एक-दूसरे को सही रास्ते पर रखकर विश्वास में वयस्कों की जिम्मेदारियों को पूरा किया है। शर्मिंदगी को जगाने के इस संक्षिप्त प्रयास के बाद, वह इब्रानियों 6:1 में, उनके धर्म परिवर्तन से शुरू हुई और अब तक की यात्रा के स्वाभाविक परिणाम के रूप में दृढ़ता का प्रस्ताव करता है।

इसके बाद उपदेशक इस उपदेश में सबसे अधिक चर्चित अंशों में से एक की ओर बढ़ता है। इब्रानियों 6 आयत 4 से 8 में उस कार्य को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है जिसका प्रस्ताव उसने किया है, पूर्णता की ओर, परिपक्वता की ओर, पूर्णता की ओर दृढ़ता से आगे बढ़ने की आवश्यकता है। क्योंकि अन्यथा करना परमेश्वर के प्रति कृतघ्नता दिखाना होगा, क्योंकि परमेश्वर ने श्रोताओं को पहले ही उपहार दे दिए हैं और इस प्रकार परमेश्वर के निरंतर अनुग्रह के अनुभव को परमेश्वर के दर्शन पर क्रोध के अनुभव के साथ बदल दिया जाएगा।

हालाँकि, 6:9 से 12 में, लेखक जल्दी से श्रोताओं की पुष्टि करने के लिए मुड़ता है, जहाँ तक कि इस बिंदु तक, उन्होंने एक दूसरे में निवेश करके भगवान के उपहारों पर अच्छा रिटर्न देकर भगवान से आशीर्वाद प्राप्त करने वाली अच्छी मिट्टी को प्रतिबिंबित किया है, इस प्रकार इस कार्यवाही को जारी रखने के लिए उनकी प्रतिबद्धता को मजबूत किया है। उपदेश के इस हिस्से में उपदेशक दर्शकों से जो सवाल पूछता है, वह यह है कि आप किस तरह के लाभार्थी साबित होंगे? क्या आप नीच या सम्माननीय, कृतघ्न या विश्वसनीय होंगे? क्या आप उपजाऊ मिट्टी साबित होते रहेंगे और इसलिए, भगवान के निरंतर अनुग्रह के योग्य प्राप्तकर्ता के रूप में आने वाले महान उपहारों को प्राप्त करेंगे? या आप खराब मिट्टी साबित होंगे, जो एक अप्रिय और यहां तक कि चोट पहुंचाने वाली प्रतिक्रिया को सामने लाती है? 6:13 से 20 में, इस विषयांतर के अंतिम भाग में, लेखक मुख्य विषय की ओर वापस आता है। वह अब्राहम का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो एक ऐसे व्यक्ति का प्राथमिक उदाहरण है, जिसने विश्वास और धीरज के माध्यम से वादों को

विरासत में प्राप्त किया, जैसा कि लेखक 6:12 में लिखता है। लेकिन यहाँ वह अब्राहम का उदाहरण पेश करता है, और इसका मुख्य उद्देश्य परमेश्वर द्वारा की गयी प्रतिज्ञाओं की विश्वसनीयता पर ज़ोर देना है।

यहाँ उपदेशक अब्राहम के भरोसे को बनाए रखने के लिए परमेश्वर द्वारा अब्राहम को दी गई शपथ पर ध्यान केंद्रित करता है और फिर एक और शपथ का उल्लेख करता है जो परमेश्वर ने यीशु में विश्वासियों की आशा के संबंध में ली थी, जिस पर वह अगले अध्याय में वापस आएगा। इब्रानियों 6.20 फिर श्रोताओं को अध्याय 5, पद 10 के विषय पर वापस लाता है, जिसमें यीशु मलिकिसिदक के आदेश के अनुसार हमेशा के लिए एक महायाजक बन गया है, इस प्रकार उपदेश को ठीक उसी स्थान पर वापस लाया गया है जहाँ उपदेशक ने इस रणनीतिक विषयांतर के लिए छोड़ा था। 5 पद 11 से 14 में, हम पाते हैं कि लेखक मण्डली को डांट रहा है।

अपने उपदेश के मूल कथन का फिर से उल्लेख करने के बाद, वास्तव में, यीशु को मलिकिसिदक की रीति पर हमेशा के लिए महायाजक नियुक्त किया गया था, वह पीछे हटता है और कहता है, अब इस विषय में जो वचन हमारे सामने है, वह लंबा और समझाने में कठिन है, क्योंकि तुम सुनने में सुस्त हो गए हो। क्योंकि यद्यपि समय बीतने के कारण अब तक तुम्हें शिक्षक हो जाना चाहिए था, फिर भी तुम्हें फिर से किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो तुम्हें परमेश्वर के वचनों की मूल बातें सिखाए, और तुम्हें फिर से दूध की आवश्यकता हो गई है, न कि ठोस भोजन की। क्योंकि जो कोई दूध पीता है, वह धार्मिकता के वचन में अकुशल है, क्योंकि वह शिशु है।

लेकिन ठोस भोजन परिपक्व लोगों के लिए है, उन लोगों के लिए जो निरंतर अभ्यास के माध्यम से अपनी क्षमताओं को महान और निम्न के बीच भेदभाव करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं। उपदेशक यहाँ श्रोताओं को सीधे और अप्रत्याशित रूप से चुनौती देता है। मैं जो कहना चाहता हूँ उसे समझना मुश्किल होगा क्योंकि आप सुनने के मामले में सुस्त हो गए हैं।

इतना ही नहीं, हालाँकि इस समय तक आपको शिक्षक बन जाना चाहिए था, फिर भी आपको किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो आपको बुनियादी बातें सिखाए। वह श्रोताओं पर आरोप लगाता है कि वे अपनी परिपक्वता में पिछड़ रहे हैं या शायद पहले से ही बड़े नहीं हुए हैं। आप ऐसी जगह पर हैं जहाँ आपको ठोस भोजन की बजाय दूध की ज़रूरत है।

इस तरह की भाषा, खास तौर पर आगे बढ़ने के लिए, जो आपको मिला है, उसके अनुसार जीने के लिए, ग्रीको-रोमन दार्शनिक प्रवचन से परिचित है। उदाहरण के लिए, स्टोइक दार्शनिक एपिक्टेटस बच्चों और वयस्कों और दूध और ठोस भोजन के इन रूपकों के बहुत शौकीन हैं, क्योंकि वह अपने श्रोताओं से आग्रह करते हैं कि वे जो सीखा है, उसे आत्मसात करें। और इसलिए, एपिक्टेटस लिखते हैं, आप खुद से सर्वश्रेष्ठ की मांग करने और सबसे अच्छा क्या है यह निर्धारित करने के लिए तर्क पर भरोसा करने से पहले कब तक इंतजार करेंगे? आपको आवश्यक सिद्धांतों से परिचित कराया गया है, और आप उन्हें समझने का दावा करते हैं, तो आप किस तरह के शिक्षक की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और जब तक वह प्रकट नहीं होता, तब तक आप

इन सिद्धांतों को व्यवहार में लाने में देरी क्यों करते हैं? आप पहले से ही एक वयस्क व्यक्ति हैं, अब बच्चे नहीं हैं।

अंत में यह तय करें कि आप एक वयस्क हैं जो अपना बाकी जीवन प्रगति के लिए समर्पित करने जा रहे हैं। दूसरी जगह, एपिक्टेटस लिखते हैं, क्या आप इस देर से, बच्चों की तरह, दूध छुड़ाने और अधिक ठोस भोजन लेने के लिए तैयार नहीं हैं? इब्रानियों के लेखक इन रूपकों का उपयोग उसी तरह से करते हैं जैसा कि हम एपिक्टेटस में पाते हैं, श्रोताओं को शर्मिंदा करते हैं कि वे उस स्तर पर नहीं पहुँच पाए जहाँ उन्हें होना चाहिए और उन्हें परिपक्व लोगों के लिए लेखक द्वारा व्यक्त की गई अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए अपनी तत्परता से खुद को परिपक्व साबित करने के लिए प्रेरित करते हैं। और यहाँ विशेष रूप से, परिपक्व लोग शिक्षकों के रूप में कार्य करेंगे, अपने साथी विश्वासियों को विश्वदृष्टि और उन प्रतिबद्धताओं में सुदृढ़ करने का काम खुद पर लेंगे जिन्हें उन्होंने ईसाईयों के रूप में एक साथ स्वीकार किया है।

परिपक्व व्यक्ति सही ढंग से यह भी पहचान लेगा कि क्या नेक है और क्या नीच या दुष्ट। वे हमेशा वही चुनेंगे जो नेक है, सभी परिस्थितियों में नेक काम करना। इब्रानियों के पादरी संदर्भ में, इस उपदेश का अर्थ होगा, हमेशा अपने पड़ोसियों के साथ अपने रिश्ते के संदर्भ में अस्थायी परिणामों के डर से इस बंधन को तोड़ने के बजाय अपने दिव्य संरक्षक के प्रति सम्मान और वफादार और आज्ञाकारी बने रहने के उद्देश्य से जीना।

इस खंड और इसके हल्के-फुल्के शर्मनाक तरीकों का लक्ष्य यह है कि संबोधित करने वालों को इस आरोप से मुक्त किया जाए कि वे परिपक्व शिक्षा के लिए तैयार नहीं हैं और उन्हें ऐसे व्यवहार की ओर बलपूर्वक निर्देशित किया जाए जो उन्हें वास्तव में परिपक्व और विश्वास में दृढ़ होने का संकेत दे, यहाँ तक कि अपने बहनों और भाइयों को भी इस तरह दृढ़ बने रहने में मदद करें। अध्याय छह की शुरुआत में, लेखक आध्यात्मिक रूप से सुस्त लोगों के लिए ठीक होने के मार्ग की रूपरेखा तैयार करता है। वह 6:1 में कार्रवाई का एक तरीका प्रस्तावित करता है। इसलिए, मसीह के मूलभूत सिद्धांतों को पीछे छोड़ते हुए, आइए हम अपनी यात्रा के अंतिम बिंदु तक आगे बढ़ें।

एक बार फिर, वह श्रोताओं से पीछे हटने, दूर जाने या चर्च की सभा को त्यागने के बजाय प्रतिबद्धता के मार्ग पर आगे बढ़ने का आग्रह कर रहा है। वह उन्हें दूसरे और अगले पदों में ऐसा करने का आग्रह करता है, न कि मृत कार्यों से पश्चाताप और ईश्वर के प्रति विश्वास, बपतिस्मा और हाथ रखने या मृतकों के पुनरुत्थान और शाश्वत न्याय के बारे में शिक्षा की नींव रखना। हमने इन शिक्षाओं, विश्वदृष्टि में इस गहन समाजीकरण और ईसाई समूह के लोकाचार की जांच की, जिसके बारे में लेखक जानता है कि हमारे शुरुआती प्रस्तुतियों में संबोधित लोगों ने कुछ गहराई से प्राप्त किया है।

लेखक उन्हें उन मूलभूत शिक्षाओं की याद दिलाता है जो उनके पीछे छिपी हैं, और जिन्हें अब उन्हें अपनी यात्रा पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। जब वह उन्हें जो कुछ भी सीखा है, उसके अनुसार जीने के लिए कहता है, तो वह यह शब्द जोड़ता है कि यदि ईश्वर अनुमति दे। इस

सूक्ष्म यदि खंड के साथ, वह श्रोताओं को धर्म परिवर्तन से लेकर ईश्वर के शाश्वत निवास के अडिग क्षेत्र तक की यात्रा के हर कदम पर ईश्वर पर उनकी निर्भरता की याद दिलाता है।

इस प्रकार, यदि यात्रा में प्रगति के लिए और यात्रा के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए ईश्वर के अनुकूल स्वभाव की आवश्यकता है, तो उपकारकर्ता का अपमान करके ईश्वर के अनुग्रह से खुद को अलग करना सबसे अनुचित कार्य बन जाता है। यह वही है जहाँ लेखक अध्याय छह, श्लोक चार से छह में आगे बढ़ रहा है, जिसके बाद गंभीर चेतावनी दी गई है। यह चेतावनी स्वयं उस कार्य के समर्थन में एक तर्क के रूप में पेश की गई है जिसका लेखक ने अध्याय छह के श्लोक एक में आग्रह किया है।

चौथी आयत की शुरुआत में ग्रीक शब्द गार की मौजूदगी, जिसका अंग्रेजी में आमतौर पर संयोजन के रूप में अनुवाद किया जाता है, इस पैराग्राफ की भूमिका को दर्शाता है। यह अधिक सटीक रूप से विपरीत से एक तर्क है। कहने का तात्पर्य यह है कि उपदेशक श्रोताओं से आग्रह कर रहा है कि वे यात्रा के अंत तक जन्म लेने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करें, और वह यह दिखाकर उस कार्यवाही का समर्थन करता है कि अगर वे ऐसा नहीं करते हैं तो क्या होता है।

इसलिए वह आगे लिखते हैं, क्योंकि उन लोगों को पश्चात्ताप के शुरुआती बिंदु पर एक बार फिर लाना असंभव है जो निर्णायक रूप से प्रबुद्ध हो चुके हैं, जिन्होंने स्वर्गीय उपहार का स्वाद चखा है और पवित्र आत्मा में भाग लिया है और परमेश्वर के अच्छे वचन और आने वाले युग की शक्तियों का स्वाद चखा है और जो भटक जाते हैं क्योंकि वे मसीह को फिर से क्रूस पर चढ़ाते हैं और उन्हें सार्वजनिक रूप से अपमानित करते हैं। इस अंश की बहुत सी चर्चाओं में एक समस्या यह है कि व्याख्याकारों की यह तय करने की प्रवृत्ति है कि उन्हें यहाँ व्यक्तियों का वर्णन ऐसे लोगों के रूप में करना चाहिए जो बचाए गए हैं या जो बचाए नहीं गए हैं या वे वास्तव में बचाए गए थे या केवल बचाए गए प्रतीत हुए थे। जैसा कि हमने पहले देखा, हालाँकि, इब्रानियों 1 पद 14 में, इब्रानियों का लेखक वास्तव में उद्धार के बारे में मुख्य रूप से कुछ ऐसी बात के रूप में सोचता है जो अभी भी आगे है।

मसीह के दूसरे आगमन पर हम इसी बात का इंतज़ार कर रहे हैं, जैसा कि वह अध्याय 9, श्लोक 28 में कहेगा। लेखक यहाँ उन व्यक्तियों का वर्णन नहीं कर रहा है जो शायद बचाए गए हों या नहीं। बल्कि, वह उन व्यक्तियों का वर्णन कर रहा है जो परमेश्वर से बार-बार उपकार प्राप्त करने वाले रहे हैं।

ईश्वर ने उन पर लगातार कृपा बरसाई है। उन्हें निर्णायक रूप से प्रबुद्ध किया गया है, जो कि नए नियम में सुसमाचार संदेश प्राप्त करने और श्रोताओं पर इसके सकारात्मक प्रभावों के लिए एक सामान्य शब्द है। उन्होंने स्वर्गीय उपहार का स्वाद चखा है और पवित्र आत्मा में हिस्सा लिया है, जो निस्संदेह पवित्र आत्मा के उनके स्वागत का संदर्भ देता है, जो कि पॉलिन मिशन में धार्मिक अनुभव का एक प्रमुख पहलू था।

जैसा कि गलातियों 3 या 1 कुरिन्थियों 2 या यहाँ तक कि इब्रानियों अध्याय 2, आयत 3 से 4 में दिए गए उपदेश में देखा जा सकता है, उन्होंने परमेश्वर के अच्छे वचन और आने वाले युग की

शक्तियों का स्वाद चखा है, संभवतः पवित्र आत्मा के उनके स्वागत और उनके बीच काम करने वाली परमेश्वर की शक्ति के उनके अनुभव को फिर से संदर्भित करते हुए, जैसा कि लेखक ने पहले के अंश में स्पष्ट रूप से याद किया है। ग्रीक में बहुवचन कृदंतों का बार-बार उपयोग इन लोगों को उन लोगों के रूप में नामित करने के लिए किया जाता है जिन्हें प्रबुद्ध किया गया है और जिनके पास ये सभी अच्छी चीजें हैं, सबसे पहले यह प्रभाव पैदा करता है कि उन्हें परमेश्वर से कितने तरह के लाभ मिले हैं और उन लाभों की भरपूर आपूर्ति भी। दोहराव परमेश्वर की उदारता और देखभाल और दृढ़ता की सीमा को रेखांकित करता है जिसके साथ परमेश्वर ने अपने बार-बार के उपकारों के द्वारा, उनमें कृतज्ञता पैदा की है।

इसलिए, यह संरक्षक-ग्राहक बंधन के दायित्वों से बचने के अपमान और अन्याय को भी बढ़ाता है जिसे परमेश्वर की उदारता ने इस श्रोता के साथ बनाया है। संयोग से, यहाँ लेखक की अधिकांश भाषा पुराने नियम के ग्रंथों के साथ जोर से गूँजती है। उदाहरण के लिए, आपने परमेश्वर के अच्छे वचन का स्वाद चखा है, और आप प्रबुद्ध हो गए हैं, जो भजन 34 के साथ प्रतिध्वनित होता है, जहाँ भजनकार कहता है, परमेश्वर के निकट आओ और प्रबुद्ध हो जाओ।

चखकर देखो कि प्रभु भला है। जिन लोगों को ऐसे बहुमूल्य उपहार मिले हैं, जो इतनी कीमत पर आए हैं, वास्तव में, ये सभी उपहार परमेश्वर के अपने बेटे की मृत्यु के द्वारा सुरक्षित किए गए थे। फिर इस तरह से कार्य करना जिससे देने वाले या मध्यस्थ, यीशु, को इस तरह के अनुग्रह का अपमान हो, एक अकल्पनीय अन्याय होगा, जो आम तौर पर किसी भी भविष्य के अनुग्रह से बहिष्कार की ओर ले जाएगा।

यहाँ, दूसरे मौके का पक्ष। उदाहरण के लिए, हम डियो क्रिसोस्टॉम के लेखन में पढ़ते हैं, जो एक दार्शनिक और राजनेता थे, जो लगभग 50 ईस्वी से 120 ईस्वी तक जीवित रहे, सभी लोग उन लोगों को उपकार के योग्य मानेंगे जो उपकारकर्ताओं का सम्मान करते हैं, लेकिन जो लोग अपने उपकारकर्ताओं का अपमान करते हैं, उन्हें उपकार के योग्य माना जाएगा। कृतघ्न व्यक्ति को, जबकि कानून द्वारा दंडित नहीं किया जाता है, उसे सार्वजनिक न्यायालय द्वारा दंडित किया जाता है और कृतघ्न के रूप में ब्रांडेड होने की उसकी अपनी जागरूकता से।

जैसा कि हम डियो के दूसरे पाठ में पढ़ते हैं, तो फिर, आप क्या कहते हैं, क्या कृतघ्न को दण्डित नहीं किया जाएगा? क्या आप कल्पना करते हैं कि जिन गुणों से घृणा की जाती है, उन्हें दण्डित नहीं किया जाएगा, या क्या सार्वजनिक घृणा से भी बड़ी कोई सजा है? कृतघ्न की सजा यह है कि वह किसी से लाभ लेने की हिम्मत नहीं करता, वह किसी को लाभ देने की हिम्मत नहीं करता, वह एक निशान है, या कम से कम वह सोचता है कि वह सभी की नज़रों में एक निशान है, उसने सबसे वांछनीय और सुखद अनुभव की सभी धारणा खो दी है। जिस तरह एक व्यक्ति बेईमान व्यापारी के साथ दो बार लेन-देन करने से इनकार करता है या किसी ऐसे व्यक्ति को दूसरी जमा राशि सौंपने से इनकार करता है जिसने पहली जमा राशि खो दी है, यह इस संस्कृति में आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि एक व्यक्ति भविष्य के उपकारों से उन लोगों को बाहर कर देगा जो कृतघ्नता से काम करते हैं। इस प्रकार की लोकप्रिय भावनाएं, जैसा कि हम डियो क्रिसोस्टोम में पढ़ते हैं, निस्संदेह इब्रानियों के पाठकों द्वारा भी साझा की गई थीं, और इससे उन्हें लेखक के इस दावे को स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया गया कि इस तरह के उपकार का दूसरा अवसर

असंभव है, जब किसी ने एक दिखावा किया हो, अपमान किया हो, और इतने महान दाता को सार्वजनिक रूप से शर्मिंदा किया हो।

इस प्रकार, उपदेशक उन्हें मसीह का अपमान करने के मार्ग पर जाने से भयभीत करेगा। यदि संबोधित करने वाले अपनी यात्रा के अंत तक आगे बढ़ने के अलावा कुछ और करते हैं, तो वे अपने उपकारकर्ता पर सार्वजनिक अपमान लाएंगे और उसके महंगे उपहारों के प्रति अवमानना दिखाएंगे। ईसाई समूह से अलग होकर अपने पड़ोसियों की बाहों में चले जाना मसीह की गवाही देता है, लेकिन यह एक नकारात्मक गवाही है जो उनके पड़ोसियों को बताती है कि यीशु की मध्यस्थता और लाभ उन्हें रखने की कीमत के लायक नहीं हैं और यह कि मनुष्यों की स्वीकृति ईश्वर द्वारा स्वीकृति और ईश्वर की उपस्थिति में स्वागत से अधिक मूल्यवान है।

उपदेशक रणनीतिक रूप से स्पष्ट छवियों के साथ सुझाव देते हैं कि इस तरह की गवाही देने के लिए, परमेश्वर के पुत्र को फिर से क्रूस पर चढ़ाना होगा, ताकि वे खुद को नुकसान पहुँचा सकें और उसे सार्वजनिक रूप से तिरस्कार के अधीन कर सकें। यीशु और यीशु के लोगों के प्रति निष्ठा में दृढ़ न रहना, इस दृष्टिकोण से अकल्पनीय होना चाहिए कि इतने उपहार और ऐसे दाता के लिए इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है। लेखक इब्रानियों 6 :7 और 8 में सादृश्य से तर्क के साथ इब्रानियों 6, 4 से 6 की स्पष्ट चेतावनी का समर्थन करता है। सादृश्य से इस तर्क के लिए, वह कृषि के क्षेत्र में जाता है, किसानों को क्या करना चाहिए और वे जमीन में इतना श्रम क्यों लगाते हैं, इसकी सामान्य प्रथाओं की ओर।

इसलिए, वह लिखते हैं, जो ज़मीन लगातार बारिश के पानी को पीती है और उन लोगों के लिए उपयोगी वनस्पतियाँ उगाती है, जिनके लिए ज़मीन पर खेती की जा रही है, उसे ईश्वर से आशीर्वाद मिलता है। लेकिन अगर उसमें काँटे और ऊँटकटारे उगते हैं, तो वह बेकार साबित होती है और शापित होने के कगार पर होती है। उसका अंत जलकर राख हो जाना है।

लेखक ने यहाँ भाषा के लिए संसाधनों के रूप में कई पुराने नियम के ग्रंथों का उपयोग किया है। उदाहरण के लिए, शाप के संबंध में काँटे और ऊँटकटारे सीधे उत्पत्ति 3, श्लोक 17 और 18 में पतन की कहानी में आदिम शाप की भाषा को याद दिलाते हैं। साथ ही, इस मार्ग में ईश्वर के आशीर्वाद और शाप के बीच विरोध पूरे पुराने नियम में, लेकिन विशेष रूप से व्यवस्थाविवरण में उसी के विरोध को याद दिलाता है।

वाचा की उस पुस्तक में, हम शाप और आशीर्वाद के बारे में पढ़ते हैं। मैं आज तुम्हारे सामने आशीर्वाद और शाप रखता हूँ। आशीर्वाद यदि तुम यहोवा अपने परमेश्वर की आज्ञाओं को सुनोगे, जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ, और शाप यदि तुम यहोवा अपने परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं सुनोगे जितनी मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ और यदि तुम उस मार्ग से भटक गए जिसकी मैंने आज्ञा दी है तो तुम दूसरे देवताओं की सेवा करने जा रहे हो जिन्हें तुम नहीं जानते।

निस्संदेह इन प्रतिध्वनियों का उन लोगों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है जो उन्हें सुनते हैं। सादृश्य इस तथ्य पर जोर देता है कि पुत्र के प्रति निरंतर आज्ञाकारिता, निरंतर निष्ठा और पुत्र के प्रति कृतज्ञता उन लोगों के बीच अंतर करने वाला एक आवश्यक घटक है जिनका भाग्य धन्य है और जिनका

भाग्य शापित है। हालाँकि, यह सादृश्य उन ग्रंथों के साथ भी दृढ़ता से प्रतिध्वनित होता है जो पारस्परिकता के सामाजिक संदर्भ के बारे में काफी सीधे तौर पर बोलते हैं।

सेनेका जैसे लेखक अपनी पुस्तक ऑन बेनिफिट्स में अक्सर कृषि संबंधी छवियों का सहारा लेते हैं, ताकि लाभ दिए जाने और लाभ दिए जाने पर क्या अपेक्षित है, इसका चित्रण किया जा सके। उदाहरण के लिए, सेनेका लिखते हैं कि हम उन लोगों को नहीं चुनते जो हमारे उपहार प्राप्त करने के योग्य हैं। संदर्भ में, सेनेका बताते हैं कि क्यों दिए गए लाभ हमेशा प्राप्त किए गए और वापस किए गए लाभों के साथ नहीं होते हैं।

वह बताते हैं कि यह हमारी अपनी गलती है क्योंकि हम हमेशा उन लोगों को नहीं चुनते जो हमारे उपहार प्राप्त करने के योग्य हैं। वह आगे कहते हैं, हम बीज और घिसी-पिटी और अनुत्पादक मिट्टी नहीं बोते, बल्कि हम अपने लाभ देते हैं या बिना किसी भेदभाव के फेंक देते हैं। उसी पुस्तक में बाद में, सेनेका लिखते हैं कि हमें उन लोगों को चुनने में सावधानी बरतनी चाहिए जिन्हें हम लाभान्वित करना चाहते हैं क्योंकि किसान भी अपने बीजों को रेत में नहीं दबाता।

फिर से, हम कभी भी इस बात की पूर्ण निश्चितता का इंतजार नहीं करते कि प्राप्तकर्ता आभारी साबित होगा या नहीं, क्योंकि सत्य की खोज कठिन है, लेकिन हम उस मार्ग का अनुसरण करते हैं जो संभावित सत्य दिखाता है। जीवन का सारा कारोबार इसी तरह आगे बढ़ता है। इस तरह हम उन लोगों के लिए बोते हैं जो बोने वाले को फसल देने का वादा करते हैं।

और अंत में, सेनेका चेतावनी देते हैं कि अगर किसान बीज बोने में अपनी मेहनत खत्म कर देता है तो वह अपना सब कुछ खो देगा। बहुत देखभाल के बाद ही फसलें अपनी उपज तक पहुँचती हैं। कोई भी चीज़ जो पहले दिन से लेकर आखिरी दिन तक लगातार खेती करके प्रोत्साहित नहीं की जाती, वह कभी भी फल देने की अवस्था तक नहीं पहुँचती।

लाभों के मामले में भी यही सत्य है। यहाँ, सेनेका उपकारकर्ताओं को प्रोत्साहित करते हैं कि वे अपने ग्राहकों को उपकार के माध्यम से प्रोत्साहित करना जारी रखें, यदि वे ऐसे रिश्तों में जिस तरह की वफ़ादारी और कृतज्ञता चाहते हैं, उसे पोषित करना चाहते हैं। हेलेनिस्टिक यहूदी ग्रंथों में भी इसी तरह की कल्पना दिखाई देती है।

फौसिलिटीज के वाक्यों के अज्ञात लेखक लिखते हैं, किसी बुरे व्यक्ति का भला मत करो। यह समुद्र में बोने जैसा है। इन अंशों में, हम पाते हैं कि लेखक जमीन में बीज बोने और उसे सावधानी से उगाने की छवि को लाभार्थियों के साथ उनके व्यवहार में दाताओं के सादृश्य के रूप में देखते हैं।

हमें मिट्टी का चयन सावधानी से करना चाहिए, ऐसी मिट्टी जो कृतज्ञता के फल को अधिक पैदा कर सके। हमें खुद को सिर्फ़ बीज बोने के लिए नहीं, बल्कि उस रिश्ते में निवेश करते रहने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। यह इब्रानियों 6:4 से 8 की गतिशीलता के साथ दृढ़ता से प्रतिध्वनित होता है। क्योंकि परमेश्वर ने अभिभाषक के दिलों में सिर्फ़ वचन का बीज नहीं बोया है।

उसने उन पर भरपूर उपहार बरसाए हैं। उसने खुद को एक अच्छे किसान की तरह निवेश किया है, न केवल बीज बोया बल्कि उसे पानी दिया, उसकी देखभाल की, उसका पालन-पोषण किया, युवा पौधों की देखभाल की और उन्हें लगातार फल देने की स्थिति में लाने की कोशिश की। लेखक ने यहाँ जो सादृश्य बनाया है, वह पुराने नियम के दूसरे पाठ, अर्थात् यशायाह अध्याय 5, श्लोक 1 से 7 में दाख की बारी के गीत के साथ भी दिलचस्प तरीके से प्रतिध्वनित होता है। वहाँ, हम पाते हैं कि यशायाह परमेश्वर के लोगों और दाख की बारी में परमेश्वर के समय, संसाधनों और ऊर्जा के निवेश के बारे में भी बात कर रहा है, साथ ही परमेश्वर की अपेक्षा है कि इस तरह के अच्छी तरह से देखभाल किए गए दाख की बारी में अच्छे अंगूर की फसल होनी चाहिए।

इसके बजाय, बेशक, यशायाह शिकायत करता है कि इस्राएल के अंगूर के बाग में खराब अंगूर पैदा हुए हैं। अंगूर के बाग के रखवाले द्वारा अंगूर के बाग को नष्ट करना यशायाह के पाठ में मौलिक और अंतिम है। इस्राएल की देखभाल करने में परमेश्वर की देखभाल स्वाभाविक रूप से परमेश्वर की अपेक्षा की ओर ले गई, जैसा कि भविष्यवक्ता कहता है, न्याय की फसल की।

इसके बजाय, इस्राएल की प्रतिक्रिया, हिंसा और उत्पीड़न को दाख की बारी में पनपने की अनुमति देकर, उस परमेश्वर को अपमानित और अपमानित करती है जिसने अपने लोगों के बीच न्याय का आदेश दिया था, और दैवीय दंड का आह्वान किया था। यहाँ, न केवल उसकी देखभाल का अंत हुआ बल्कि उस समुदाय का विनाश भी हुआ जिसने इतनी बुरी वापसी को जन्म दिया। इसलिए, हमारे उपदेशक के श्रोता इब्रानियों 6, 7 और 8 में कृषि सादृश्य के बिंदु को तुरंत पहचान लेंगे। धर्मातरित लोगों में परमेश्वर द्वारा स्वयं और अपने उपहारों का लाभकारी निवेश उनके जीवन में ऐसा फल उत्पन्न करेगा जिसे परमेश्वर प्रसन्न करेगा।

जैसा कि लेखक लिखते हैं, भूमि जो उस पर अक्सर होने वाली बारिश को पीती है, उपदेशक द्वारा श्लोक 7 से 5 में बताए गए लाभों की लहरों को याद करती है, और उन लोगों के लिए उपयोगी वनस्पति पैदा करती है जिनके लिए भूमि की खेती की जा रही है, यह अनुमान लगाती है कि लेखक अगले खंड में श्लोक 9 से 12 में क्या करने जा रहा है। ईश्वर भूमि की खेती कर रहा है, प्रत्येक श्रोता की मिट्टी, बेशक, ईश्वर के अपने लाभ के लिए नहीं, क्योंकि ईश्वर को समुदाय में प्रत्येक श्रोता की बहनों और भाइयों के लाभ के अलावा कुछ नहीं चाहिए। लेखक श्लोक 9 और 10 में इसे स्पष्ट करेगा।

एक दूसरे में उनका निवेश उन लोगों के लिए उपयुक्त फल है जिनके लिए वे खुद खेती कर रहे हैं। लेकिन जो लोग इसके बजाय सार्वजनिक राय के न्यायालय में परमेश्वर के पुत्र को फिर से सूली पर चढ़ाने में शामिल होते हैं, वे न केवल इनाम खो देंगे बल्कि ईश्वरीय प्रतिशोध की वस्तु बन जाएंगे। इब्रानियों 6, 8 इस बात का संकेत देते हैं जैसा कि उपदेशक कहते हैं, ऐसी मिट्टी का अंत जलना है।

लेकिन इब्रानियों 10 की आयत 26 से 31 इसे और भी स्पष्ट कर देगी। अध्याय 6, आयत 4 से 8 में अपनी कड़ी चेतावनी के तुरंत बाद, लेखक आयत 9 से 12 में विनाश के बजाय उद्धार की ओर आगे बढ़ने का रास्ता बताता है। और इसलिए, वह लिखता है, हम तुम्हारे बारे में बेहतर बातों के बारे में आश्वस्त हैं, जो उद्धार को धारण करती हैं, भले ही हम इस तरह से बोलते हैं।

रेटोरिका नामक पाठ्यपुस्तक में पाया जाता है। विज्ञापन हेरेनिया । ईसा पूर्व पहली शताब्दी के इस पाठ में, हमें ठीक यही सलाह दी गई है। अगर इस तरह की स्पष्ट बातें बहुत तीखी लगती हैं, तो उन्हें शांत करने के कई तरीके होंगे, क्योंकि इसके बाद कोई भी तुरंत इस तरह की कोई बात जोड़ सकता है।

मैं यहाँ आपके सद्गुणों की अपील करता हूँ। मैं आपकी बुद्धिमत्ता का आह्वान करता हूँ। मैं आपकी पुरानी आदत की चर्चा करता हूँ, ताकि प्रशंसा खुलेपन से उत्पन्न भावनाओं को शांत कर सके।

परिणामस्वरूप, प्रशंसा श्रोता को क्रोध और झुंझलाहट से मुक्त करती है, और स्पष्टवादिता उसे गलती करने से रोकती है। यह वही है जो लेखक इब्रानियों 6:4 से 12 के साथ पूरा करता है। 6:4 से 8 में उनकी स्थिति के खतरे के बारे में स्पष्टता अपने उद्देश्य को प्राप्त करती है, लेकिन श्लोक 9 से 12 में आश्वासन भी श्रोताओं को विश्वास की स्थिति में, उपदेशक के साथ एकजुटता की स्थिति में, और इस भावना को पुनर्स्थापित करता है कि उपदेशक वास्तव में उनके बारे में सबसे अच्छा सोचता है, भले ही उसने उन्हें अध्याय 5:11 से 14 में डांटा हो, और अभी-अभी इतनी कड़ी चेतावनी दी हो।

लेखक के आत्मविश्वास की अभिव्यक्ति फिर से 6:4 से 8 में भय की अपील के साथ बारी-बारी से आती है। हमने पहले अध्याय 4, श्लोक 12 से 13 में भी यही परिवर्तन देखा था, जो भय की अपील करता है, और अध्याय 4, श्लोक 14 से 16 में भी यही परिवर्तन देखा था, जो आत्मविश्वास की अपील करता है। और हम अध्याय 10, श्लोक 19 से 34 में भी यही परिवर्तन देखेंगे। आत्मविश्वास और भय दो भावनाएँ हैं जिनका लेखक रणनीतिक रूप से उपयोग करता है और उन्हें एक साथ लागू करता है ताकि श्रोताओं को यीशु के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को त्यागने के मार्ग से दूर रखा जा सके और उन्हें दृढ़ता, निष्ठा और कृतज्ञता की प्रतिक्रिया के साथ पहचान करने के लिए प्रेरित किया जा सके।

लेखक आगे बताता है कि क्यों उसे विश्वास है कि श्रोताओं के लिए उससे बेहतर चीज़ें इंतज़ार कर रही हैं जो उसने अभी वर्णित की हैं। परमेश्वर के लिए, आपके काम और उसके नाम पर आपके द्वारा दिखाए गए प्रेम को भूलना अन्याय नहीं है, संतों की सेवा करना और उनकी सेवा करना जारी रखना। लेकिन हम चाहते हैं कि आप में से हर कोई आशा के पूर्ण खेलने तक उसी उत्साह को दिखाए ताकि आप सुस्त न हों बल्कि उन लोगों की नकल करें जो विश्वास और धैर्य के माध्यम से वादों को प्राप्त करते हैं।

उपदेशक श्रोताओं के काम और प्रेम को विशेष रूप से पहचानता है जो उन्होंने मसीह के नाम पर पहले एक दूसरे की सेवा करके दिखाया है और अब भी एक दूसरे की सेवा करना जारी रखते हैं, जो विश्वासियों को परमेश्वर के सामने आत्मविश्वास के लिए आधार देता है। यह उन लोगों के लिए उपयुक्त फसल की उपज है जिनके लिए परमेश्वर ने प्रत्येक धर्मातरित व्यक्ति पर इतने सारे उपहार बरसाए हैं। ये कार्य परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए सभी निवेशों और उपहारों के लिए परमेश्वर को उचित प्रतिफल की अभिव्यक्ति का हिस्सा रहे हैं।

ये वे निवेश और अभ्यास हैं जिन्हें न्यायी परमेश्वर नहीं भूलेगा, अर्थात्, परमेश्वर उपदेशक के श्रोताओं के संबंध में सम्मान और पुरस्कार देगा। इस कार्यवाही में उनकी पिछली प्रगति की पुष्टि करके, लेखक उन्हें भय के आह्वान के बाद सबसे स्वागत योग्य आत्मविश्वास के लिए आधार देता है और उन्हें उस चीज़ में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करता है जो उन्हें यह आत्मविश्वास देती है, अर्थात् वह प्रेम जो उन्होंने परमेश्वर के नाम पर संतों की सेवा करते हुए और उनकी सेवा करते हुए दिखाया। लेखक ने, इस बिंदु तक, अपने श्रोताओं को जो उन्होंने सुना है उसके प्रति प्रतिक्रिया में सुस्त होने से बचने का तरीका दिखाया है और वास्तव में विश्वास करता है कि वे परमेश्वर द्वारा बोले गए वचन के साथ-साथ लेखक द्वारा इस उपदेश में उनसे बोले जा रहे अधिक तात्कालिक वचन के प्रति अपनी प्रतिक्रिया के संबंध में सुस्त साबित नहीं होंगे।

इस अनुच्छेद को समाप्त करते हुए, वह उनसे आग्रह करता है कि वे उन लोगों का अनुकरण करें, जो विश्वास और धैर्य के माध्यम से, वादे के उत्तराधिकारी बन गए हैं। यह इब्रानियों 11:1 से 12:3 में आने वाले विश्वास के उदाहरणों की अद्भुत परेड की आशा करता है। हालाँकि, यहाँ ऐसे व्यक्तियों का सामान्य उल्लेख एक सूक्ष्म अनुस्मारक भी है कि विश्वास में दृढ़ता संभव है क्योंकि कई लोग पहले भी इस तरह दृढ़ रहे हैं। आगे का रास्ता, हालाँकि कठिन है, फिर भी संभव है।

विश्वास और धैर्य के माध्यम से, वादों को प्राप्त करने वालों का यह उल्लेख अध्याय 6, श्लोक 13 से 20 में आने वाले संक्रमणकालीन पैराग्राफ के लिए भी एक आसान शुरुआत है, जो अब्राहम, विश्वास और दृढ़ता के आदर्श और दिव्य वादों के एक प्रसिद्ध प्राप्तकर्ता के बारे में विचार करने के साथ शुरू होता है। अध्याय 6 के अंतिम श्लोकों में, लेखक श्रोताओं को पूर्णता की ओर आत्मविश्वास से आगे बढ़ने के लिए और भी कारण प्रदान करता है, जो कि मसीह के साथ शुरू हुई उनकी यात्रा के अंत तक है। इस पैराग्राफ का मुख्य बिंदु श्रोताओं को उस संदेश की विश्वसनीयता पर प्रभावित करना है जो उन्हें प्राप्त हुआ है और उस मध्यस्थ की विश्वसनीयता जिस पर उन्होंने अपना भरोसा रखा है।

न केवल परमेश्वर का वादा बल्कि परमेश्वर की शपथ भी उस मध्यस्थ के पीछे खड़ी है और यीशु के पुरोहितत्व की प्रभावशीलता की गारंटी देती है ताकि परमेश्वर का अनुग्रह और यीशु के ग्राहकों के लिए लाभ सुरक्षित हो सके। उपदेशक इस बात पर विचार करके शुरू करता है कि कैसे परमेश्वर ने अब्राहम को भी ऐसी शपथ प्रदान की। क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम को एक वादा दिया था, क्योंकि उसके पास शपथ लेने के लिए कोई बड़ा नहीं था, इसलिए उसने अपनी ही शपथ खाकर कहा, मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा, और निश्चय तुझे बढ़ाऊँगा।

और इस प्रकार, धैर्य में दृढ़ रहने के कारण, अब्राहम ने वादा प्राप्त किया। उपदेशक उत्पत्ति अध्याय 22, श्लोक 15 से 18 का संदर्भ देता है और आंशिक रूप से उसका पाठ करता है, जहाँ हम इस शपथ को अधिक विस्तार से पढ़ते हैं। प्रभु के दूत ने स्वर्ग से दूसरी बार अब्राहम को पुकारा और कहा, प्रभु कहते हैं, मैंने अपनी शपथ खाई है, क्योंकि तूने यह किया है और अपने पुत्र, अपने इकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, इसलिए मैं तुझे आशीष दूँगा, और तेरे वंश को आकाश के तारों और समुद्र के किनारे की रेत के समान असंख्य बनाऊँगा।

निम्नलिखित श्लोक में, हमारे उपदेशक मानवीय क्षेत्र में शपथ लेने के बारे में एक सामान्य अवलोकन करते हैं। मनुष्य किसी बड़े व्यक्ति के अनुसार शपथ लेते हैं, और शपथ सभी विरोधाभासों को सुलझाने का काम करती है। शपथ के बारे में यह सामान्य अवलोकन है कि शपथ भाषण या दी गई गवाही की विश्वसनीयता की पुष्टि करने के लिए ली जाती है।

उदाहरण के लिए, शपथ का इस्तेमाल अक्सर अदालतों में सबूत के तौर पर किया जाता है। पहली सदी के पहले हिस्से के एक विपुल यहूदी व्याख्याकार, अलेक्जेंड्रिया के फिलो ने शपथ के बारे में यह लिखा है। अनिश्चित चीजों की पुष्टि की जाती है, और दृढ़ विश्वास की कमी वाली चीजों को शपथ के माध्यम से पुष्टि मिलती है।

अब, श्रोताओं को पता चल जाएगा कि मनुष्य कभी-कभी धोखे से शपथ ले सकते हैं। हालाँकि, परमेश्वर की शपथ निश्चित रूप से निश्चितता प्रदान करती है। जब परमेश्वर शपथ लेता है तो अभिभाषक परमेश्वर की सत्यता पर सवाल उठाने से हिचकिचाते हैं।

इब्रानियों के अध्याय 3 और 4 में पहले से उल्लेखित जंगल की पीढ़ी का उदाहरण, जहाँ प्राचीन इब्रानियों ने ठीक इसी मुद्दे पर परमेश्वर को भड़काया था, परमेश्वर पर अविश्वास करने या परमेश्वर की अविश्वसनीयता या परमेश्वर के वादों की अविश्वसनीयता का आरोप लगाने के खिलाफ़ भारी पड़ेगा। परमेश्वर को शपथ लेनी चाहिए, यह कुछ हद तक समस्याग्रस्त है। शपथें धोखे की संभावना के कारण दी जाती हैं, लेकिन परमेश्वर के हर शब्द को सत्य और विश्वसनीय माना जाना चाहिए, यहाँ तक कि शपथ के बिना भी।

जब एलेक्जेंड्रिया के फिलो ने उत्पत्ति 22 पर टिप्पणी की, तो उन्होंने भी इस समस्या को पहचाना, और उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि परमेश्वर शपथ इसलिए नहीं देता क्योंकि परमेश्वर को अन्यथा झूठा माना जा सकता था, बल्कि इसलिए कि वह मनुष्यों के लिए उस पर पूरी तरह से भरोसा करना आसान बनाना चाहता था। यह ठीक वही उद्देश्य है जिसे इब्रानियों के लेखक ने भी परमेश्वर के शपथ लेने की व्याख्या करने के लिए उद्धृत किया है। परमेश्वर, वादे के उत्तराधिकारियों को परमेश्वर की अपरिवर्तनीय इच्छा को और भी अधिक दिखाना चाहता था, इसलिए उसने शपथ को बीच में रखा ताकि दो अपरिवर्तनीय चीजों के माध्यम से, जिनमें परमेश्वर के लिए झूठा साबित होना असंभव है, हम जो भाग गए हैं, हमारे सामने जो आशा है उसे पकड़ने के लिए दृढ़ विश्वास हो सकता है।

जिस वादे का लेखक यहां जिक्र कर रहा है, वह संभवतः भजन ९५, पद ७ से ११ में किए गए वादे के रूप में सुना जाएगा, जिसे उपदेशक ने इब्रानियों ४:१ में संक्षेप में बताया, आओ हम डरें, ऐसा न हो कि जब तक परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करने का वादा बना रहे, तुम में से कोई इसे पूरा करने से चूक जाए। तो यहां जो वादा ध्यान में है, वह वह वादा है जो परमेश्वर लोगों को अडिग दिव्य क्षेत्र में स्वागत करने का देता है, वह क्षेत्र जहां परमेश्वर ने सृष्टि के अपने कार्य के बाद विश्राम किया था। लेखक जिस शपथ का जिक्र कर रहा है, वह भजन ११०, पद ४ की शपथ है। लेखक ने पहले ही इस पद को आंशिक रूप से उद्धृत किया है, तुम मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिए याजक हो, लेकिन उसने इस पद के शुरुआती शब्दों को पढ़ना टाल दिया है जहां हम पढ़ेंगे,

आप हमेशा के लिए एक पुजारी हैं। वास्तव में, हमारे लेखक इब्रानियों अध्याय 7, पद 21 तक पद के इस भाग को नहीं दोहराएंगे। लेखक चाहता है कि श्रोता दोनों दिव्य भविष्यवाणियों, भजन 95 के वादे और भजन 110 की शपथ को पकड़ कर रखें, क्योंकि वे इस बात के पक्के संकेत हैं कि सुसमाचार का संदेश जिस पर उन्होंने भरोसा किया है, विश्वसनीय है।

लेखक रणनीतिक रूप से श्रोताओं के साथ-साथ खुद का भी वर्णन करता है, हम जो भाग गए हैं। वह मण्डली को याद दिला रहा है, खासकर उन लोगों को जो अपने पिछले जीवन में लौटने के बारे में सोच रहे हैं, बड़े समाज में फिर से प्रवेश करने का रास्ता खोजने की कोशिश कर रहे हैं, कि वे पहले उस दुनिया से भागकर चर्च में आए थे जैसे कि किसी बड़े खतरे से। वह उनके लिए शरणार्थियों के रूप में उनकी पहचान को पुष्ट करता है जो कि अंतिम निर्णय की तबाही से भाग रहे हैं, फिर से श्रोताओं की धर्मशिक्षा के दो स्तंभों को याद करते हुए, मृतकों का पुनरुत्थान और इब्रानियों 6, श्लोक 2 में वर्णित शाश्वत न्याय। वे मसीह के तत्वावधान में ईसाई सभा में एकत्र हुए हैं, न्याय के उस दिन से सुरक्षा और मुक्ति की तलाश में।

पाठ का यह भाग लेखक द्वारा इस शपथ, इस आशा के बारे में बात करने के साथ समाप्त होता है, एक लंगर जो हमारे पास हमारी आत्माओं के लिए है, सुरक्षित और दृढ़, एक ऐसा लंगर जो पर्दे के भीतरी हिस्से में प्रवेश करता है जहाँ यीशु ने हमारे लिए एक अग्रदूत के रूप में प्रवेश किया, मलिकिसिदक के आदेश के अनुसार हमेशा के लिए एक उच्च पुजारी बन गया। इन दो संक्षिप्त छंदों में, लेखक एक लंगर की आकृति का परिचय देता है, जो संबोधित करने वालों को अपने जीवन में एक निश्चित बिंदु के रूप में स्वर्गीय मातृभूमि के आश्वासन पर विचार करने के लिए आमंत्रित करता है, जो उन्हें बहाव के खतरे से बचाता है, जिसका उल्लेख लेखक ने अध्याय 2, छंद 1 से 4 में किया था। यह आशा उनका लंगर है, उनके वर्तमान तूफानों के बीच उनकी स्थिरता का बिंदु, साथ ही साथ उनकी सामाजिक अस्थिरता और हाशिए पर होना। यह लेखक के ब्रह्मांड विज्ञान के साथ बहुत अच्छी तरह से मेल खाता है, जिसके अनुसार दिव्य क्षेत्र अडिग है, इस तरह से कि इस निर्मित, अस्थिर क्षेत्र की चीजों में कोई लंगर, कोई निश्चित स्थिरता नहीं हो सकती है।

यहाँ यीशु का वर्णन एक स्काउट के रूप में किया गया है, एक सैन्य व्यक्ति जो सेना के मुख्य दल के आगे चलता है, अध्याय 2, श्लोक 9 से 10 में पहले उपदेशक द्वारा यीशु की प्रस्तुति को याद दिलाता है, जो परमेश्वर के पुत्रों और पुत्रियों के मुख्य दल के आगे चला गया है, उन्हें महिमा के उनके परमेश्वर-नियुक्त भाग्य की ओर ले जा रहा है। जहाँ यीशु गया है, वहाँ बहुत से विश्वासी उसका अनुसरण करेंगे। हालाँकि, वर्तमान में, आशा ही विश्वासी का एकमात्र हिस्सा है जो यीशु के साथ उस सुरक्षित स्थान में, पर्दे के पीछे, परमेश्वर की वास्तविक उपस्थिति के स्वर्गीय तम्बू में प्रवेश कर चुका है।

इस प्रकार, जब तक विश्वासी उस आशा को थामे रहता है, तब तक वह उस जीवन रेखा को थामे रहता है जिसके द्वारा वह शाश्वत, अडिग क्षेत्र में प्रवेश कर सकता है। इस प्रकार लेखक श्रोताओं से आग्रह करता है कि वे अपनी स्थिरता, अपनी जड़ता को परमेश्वर के वादे में अपनी आशा में खोजें, न कि अपने पड़ोसियों द्वारा स्वीकृति में या दुनिया में अपने स्थान को पुनः प्राप्त करने में, जो समाप्त हो रही है। अध्याय 6, पद 20 के अंतिम शब्दों के साथ, यीशु मलिकिसिदक के क्रम

के अनुसार हमेशा के लिए एक महायाजक बन गया है, और उपदेशक ने अपने प्रवचन को ठीक उसी जगह पर वापस लाया है जहाँ उसने अध्याय 5, पद 10 में छोड़ा था, जो इब्रानियों 7, 1 से 10, 18 के लंबे और कठिन वचन के मुख्य विषय पर वापस पुल का निर्माण करता है, जो परमेश्वर की शपथ और हमारी उचित प्रतिक्रिया द्वारा स्थापित याजकत्व को अपना केंद्र बनाएगा।

इब्रानियों 5:11 से 6:20 के विचलन ने कई महत्वपूर्ण तरीकों से श्रोताओं के लिए लेखक के बयानबाजी के एजेंडे को आगे बढ़ाया है। 5:11 से 14 में, लेखक उन अपेक्षाओं को प्रस्तुत करता है जिन्हें श्रोताओं को पूरा करना चाहिए और ऐसा न करने के लिए उन्हें अधिक से अधिक शर्मिंदा करता है। यह उनके गैर-ईसाई पड़ोसियों की अपेक्षाओं से उनका ध्यान हटाने का एक रणनीतिक तरीका है यदि उनका ध्यान उस दिशा में बह रहा है और उनका ध्यान केवल उपदेशक की अपेक्षाओं पर ही नहीं बल्कि, निश्चित रूप से, उस ईश्वर की अपेक्षाओं पर केंद्रित करना है जिसका संदेश उपदेशक दर्शाता है।

6:1 से 8 में, लेखक ने श्रोताओं के सामने फिर से कार्यवाही का वह तरीका रखा है जिसे वह चाहता है कि वे पूरे दिल से अपनाएँ, अर्थात् मसीह और उस ईश्वर के प्रति कृतज्ञतापूर्वक और वफ़ादारी से और आज्ञाकारी रूप से जीने में दृढ़ता के लिए प्रतिबद्ध होना जिसके साथ मसीह ने उन्हें जोड़ा है। वह एक तर्क के साथ इसका समर्थन करता है जो विशेष रूप से उपहार देने और प्रतिक्रिया, अनुग्रह और कृतज्ञता, पारस्परिकता के साझा सामाजिक ज्ञान पर आधारित है जो व्यावहारिक रूप से भूमध्यसागरीय बेसिन के निवासियों में निहित है, चाहे वे मुख्य रूप से यहूदी, ग्रीक या रोमन संस्कृति में स्थित हों। यह उनकी मौलिक सोच का हिस्सा है।

जो लोग उपहार देते हैं, वे कृतज्ञता के पात्र हैं। जो लोग अच्छा करते हैं, उनका अपमान या अपमान नहीं किया जाना चाहिए। और इसलिए उपदेशक इस सांस्कृतिक तर्क का उपयोग करता है, यह लगभग आंतरिक नैतिक प्रतिबद्धता जो श्रोताओं को दृढ़ता के उस मार्ग की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी, ताकि उन्हें वास्तव में डर हो कि वे ईश्वर द्वारा उन पर इतने महंगे उपहारों की वर्षा करने के लिए ईश्वर को बुरा प्रतिफल न दें।

उपदेशक ने श्रोताओं के मन में परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को खत्म करने के डर को जगाया और श्रोताओं को उनके विश्वास के कारण की ओर पुनः निर्देशित किया, खास तौर पर अध्याय 6, श्लोक 9 से 12 में, इस हद तक कि वे विश्वास के समुदाय में और एक दूसरे की दृढ़ता में निवेश करना जारी रखते हैं। उस हद तक, वे अनुग्रह में बने रहने के लिए आश्वस्त हो सकते हैं क्योंकि वे उस फल को प्राप्त कर रहे हैं जिसके लिए परमेश्वर ने उन पर ऐसी आशीर्षें बरसाई हैं, और वे इस प्रकार परमेश्वर के वादा किए गए भविष्य के लाभों को प्राप्त करने के लिए आश्वस्त हो सकते हैं। अंतिम पैराग्राफ में, उपदेशक इस बहुत ही प्रासंगिक विषयांतर से अधिक विमर्शपूर्ण मोड में लौटता है क्योंकि वह फिर से उस आधार पर संकेत देता है जो उसके श्रोताओं को उनकी आशा के बारे में निश्चितता के लिए है, अर्थात् भजन 110 श्लोक 4 में परमेश्वर की शपथ, जो परमेश्वर के वादों और यीशु की उनकी ओर से स्वयं की प्राप्ति की पुष्टि करती है जिसे वे स्वयं अभी भी प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हैं, अर्थात् परमेश्वर के शाश्वत क्षेत्र में प्रवेश।

यह अंश हर परिस्थिति में ईसाइयों को कुछ महत्वपूर्ण तरीकों से चुनौती देने के लिए निरंतर जारी है। 5:11 से 14 में अपने श्रोताओं को शर्मिंदा करने वाला लेखक हमें चुनौती देता है कि हम जो हासिल कर चुके हैं, उसके अनुसार जिएँ और विश्वास में अपने बहनों और भाइयों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी स्वीकार करें। लेखक हमें चुनौती देता है कि हम दूसरों के विश्वास और दृढ़ता के लिए प्रोत्साहन और सुदृढ़ीकरण के अधिक सक्रिय स्रोत बनें, न कि केवल निष्क्रिय पात्र बनकर निरंतर प्रोत्साहन और सुदृढ़ीकरण की प्रतीक्षा करें।

एक ऐसा क्षेत्र जिसमें ईसाई अक्सर कम पड़ जाते हैं, वह यह है कि हम ईश्वर या आस्था, ईसाई विश्वास या धर्मग्रंथों के बारे में जानकारी प्राप्त करने पर बहुत ध्यान देते हैं, लेकिन हम अपने और अपने भाइयों और बहनों के निर्माण पर आनुपातिक समय नहीं देते हैं। लेखक हमें प्रोत्साहित करेंगे कि हम ईश्वर के बारे में जो जानते हैं, मसीह के बारे में जो जानते हैं और जो हम जानते हैं कि ईश्वर हमारे अंदर और हमारे बीच लाना चाहता है, उससे आगे बढ़कर इस बारे में बहुत स्पष्ट रूप से सोचें कि इसे कैसे मूर्त रूप दिया जाए और इस ज्ञान को कैसे आकार दिया जाए कि हम कैसे जीने जा रहे हैं। यह सिर्फ एक तरीका है जिससे हम एक तरफ जो जानते हैं और दूसरी तरफ जो फल हम लाते हैं, उसके बीच के अंतर को पाट सकते हैं।

लेखक हमें अपनी मण्डलियों में भी प्रोत्साहित करता है कि हम अपने नए सदस्यों को मिलने वाली शिक्षा और समाजीकरण पर उचित ध्यान दें। इब्रानियों 6 आयत 1 से 3 नए सदस्यों के वर्ग के लिए एक संपूर्ण और संपूर्ण पाठ्यक्रम प्रस्तुत करती है, जैसा कि इब्रानियों की पहली सदी की मण्डलियों के लेखक में अभ्यास किया गया था। उन शिक्षकों, प्रारंभिक ईसाई चर्चों के उन नेताओं ने धर्मांतरित लोगों को दुनिया के दृष्टिकोण के बारे में सोचने में मदद करने पर बहुत ध्यान दिया कि सुसमाचार को स्वीकार करने का मतलब है कि वे उस विश्वदृष्टि के निहितार्थों को भी स्वीकार करते हैं और सोचते हैं कि वे अपने जीवन को कैसे जीने जा रहे हैं।

उपदेशक हमें यह सुनिश्चित करने के लिए चुनौती देंगे कि हम चर्च में शामिल होने का मतलब सदस्य बनने से कहीं ज़्यादा समझें। बल्कि, इसका मतलब ऐसे लोग बनना है जिनमें आस्था, पंथ की बुनियादी रूपरेखाएँ अच्छी तरह से स्थापित और अच्छी तरह से बनाई गई हों, ताकि यह इन नए सदस्यों के लिए उनके अभ्यास, उनके दृष्टिकोण और उनकी महत्वाकांक्षाओं के बारे में सोचने का आधार और शुरुआती बिंदु बन जाए। लेखक हमें चुनौती देता है कि हम इसे अपना लक्ष्य बनाएं, वास्तव में हमारा सर्वोच्च लक्ष्य, ईश्वर को वैसा ही वापस देना जैसा ईश्वर ने हमें दिया है।

पारस्परिकता का वह लोकाचार जिसकी हम खोज कर रहे हैं, वह पाठ का कोई सामाजिक रूप से सीमित या सांस्कृतिक रूप से सीमित पहलू नहीं है। इब्रानियों के लेखक ने इस लोकाचार को अपने उपदेश के आधारभूत तर्क के ताने-बाने में बुना है। हम इसे नए नियम के अन्य लेखकों में भी पाते हैं।

उदाहरण के लिए, पौलुस ने अपने एक पत्र में, 2 कुरिन्थियों 5:15 में, मसीह की मृत्यु के उद्देश्य के बारे में बहुत ही साहसिक बयान देते हुए, इस गतिशीलता को काफी जोरदार तरीके से अपील की है। पौलुस वहाँ लिखता है कि मसीह, उद्धारण, सभी के लिए मरा ताकि जो लोग जीवित रहे, वे

अब अपने लिए नहीं, बल्कि उसके लिए जीते रहें जो उनके लिए मरा और जी उठा। वहाँ हम एक और नए नियम की आवाज़ सुनते हैं जो जोर देती है कि एक आभारी हृदय की उचित और आवश्यक प्रतिक्रिया, जो किसी उपकार को पूरी तरह से वापस करना चाहता है, वह है यीशु के लिए जीना, अपने जीवन के बाकी हिस्सों को इस दुनिया में हमारे माध्यम से यीशु के हितों को आगे बढ़ाने के लिए देना, बजाय इसके कि हम अपने लिए जीना जारी रखें और अपने बचे हुए जीवन के साथ अपने हितों को आगे बढ़ाएँ।

इब्रानियों के लेखक ने हमें यह पहचानने के लिए प्रेरित किया है कि ईश्वर ने हमें जो कुछ भी दिया है, उसे वापस देने के लिए एक आवश्यक स्थान है, विश्वास में अपने बहनों और भाइयों के समर्थन और प्रोत्साहन में खुद को निवेश करना, खुद को और अपने स्वयं के संसाधनों को उनके विश्वास में दृढ़ता को सुविधाजनक बनाने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है उसे प्रदान करना। आज के संदर्भ में, मैं विशेष रूप से उन देशों में बताए गए ईसाइयों के बारे में सोचता हूँ जहाँ ईसाई होना या तो पूरी तरह से अवैध है या निश्चित रूप से सामाजिक रूप से इस तरह से नफ़रत की जाती है कि ईसाई खुद को हाशिए पर, परेशान, कभी-कभी अवैध लेकिन फिर भी प्रभावी भीड़ हिंसा के शिकार, या अधिक सीमित, एकल, व्यक्तिगत हिंसा के शिकार, या यहाँ तक कि राज्य प्रायोजित उत्पीड़न के शिकार पाते हैं। लेखक हमें प्रोत्साहित कर रहे हैं कि हम चर्च होने की वैश्विक वास्तविकता को जीते हुए खुद को प्रेम और सेवा के कार्यों में निवेश करना जारी रखें, जहाँ भी हमारी बहनों और भाइयों की ज़रूरत हो, उनकी सेवा करना जारी रखें, और कई तरीकों से उनकी प्रार्थनाओं का ईश्वर का उत्तर बनें, हमारे महान संरक्षक की सेवा करें, जो इस तरह से भी ईश्वर से मदद माँग रहे हैं।

इब्रानियों के इस खंड के अंतिम छंदों में, लेखक फिर से इस मूलभूत मुद्दे को उठाता है कि हम अपनी आत्माओं के लिए एक लंगर कहाँ ढूँढ़ते हैं। सामान्य प्रार्थना की पुस्तक में लेंट के पाँचवें रविवार के लिए संग्रह यह प्रार्थना है। अपने लोगों को अनुग्रह प्रदान करें कि वे आपकी आज्ञाओं से प्रेम करें और जो आप वादा करते हैं उसकी इच्छा करें, ताकि दुनिया के तेज़ और विविध परिवर्तनों के बीच, हमारे दिल निश्चित रूप से वहाँ स्थिर हो सकें जहाँ सच्ची खुशियाँ पाई जाती हैं।

इब्रानियों के लेखक ने ऐसी प्रार्थना की है जिसमें वह हमसे आग्रह करता है कि हम अपने दिलों को हमेशा के लिए ईश्वर के साथ रहने पर केंद्रित करें और इस जीवन के बदलावों और अवसरों के बीच अपनी सुरक्षा के लिए नींव रखें, यीशु के साथ हमारा संबंध जो हमसे पहले उस स्थान पर गया है जहाँ सच्ची खुशियाँ पाई जाती हैं। यह हमारे लिए एक चुनौती बनी हुई है, जो इस दुनिया से लगातार प्रोत्साहित हो रहे हैं जिसमें हम रहते हैं कि भौतिक और दृश्यमान को ही एकमात्र वास्तविक दुनिया के रूप में माना जाए। लेखक हमें याद दिलाता है कि वास्तव में, इसके विपरीत मामला है।